राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं आर्थिक विकास में योगदान

*बाबूलाल मीणा
**श्रवण कुमार मीणा

सारांश–

राजस्थान की संस्कृति का स्वरूप, गौरवमयी इतिहास, किले, महल व हवेलियाँ, जीवन के उल्लास से जुड़े मेले और त्योहार, लोक संगीत व लोक नृत्य, यहाँ का सुरम्य परिवेश व रेत के टीले इत्यादि सभी कुछ इस कदर आकर्षक है कि पर्यटक इस भूमि पर बार–बार आना चाहते हैं। मेहमान नवाजी की शानदार परम्पराओं के कारण राजस्थान में पर्यटन आरम्भ से ही यहाँ की परम्परा का हिस्सा रहा है। इसी कारण राजस्थान पर्यटकों का पसन्दीदा राज्य बन चुका है। वर्ष 2015 में राज्य में 351.87 लाख स्वदेशी एवं 14.75 लाख विदेशी पर्यटकों सहित कुल 366.62 लाख पर्यटक भ्रमण पर आये जिससे 5.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। अब विदेशी पर्यटक सबसे पहले राजस्थान का रूख करते हैं। वर्ष 2015 में भारत में आये कुल विदेशी पर्यटकों से 18.40 प्रतिशत राजस्थान भ्रमण पर आये। राजस्थान में स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों के आगमन में उतार चढ़ाव रहा है, फिर भी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। राजस्थान में पर्यटकों की निरन्तर वृद्धि को देखते हुए आने वाले समय में यह क्षेत्र पर्यटक हब साबित हो सकता है। आधुनिक समय में पर्यटन विश्व बाजार में एक महत्त्वपूर्ण उद्योग के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। भारत में पर्यटन को उद्योग का दर्जा सातवीं पंचवर्षीय योजना में दिया गया। इसका आर्थिक महत्व बहुत अधिक है। इससे बहुमुल्य विदेशी मुद्रा अर्जित होती है। इस उद्योग में कम पूंजी निवेश करके अधिक मुद्रा अर्जित की जा सकती है। विदेशी एवं घरेलू दोनों ही पर्यटन राज्य में आय सृजन करते हैं। पर्यटकों द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से किया गया खर्च किसी भी स्थान विशेष की अर्थव्यवस्था में लाभ पहुंचाता है। पर्यटन रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। इससे राज्य के दूर–दराज के हिस्सों में रोजगार सृजन किया जा सकता है। पर्यटन उद्योग में प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रोजगार करने की अद्भुत सामर्थ्य है। जैसे होटल, टूर–ऑपरेटरों, पर्यटन कार्यालय, परिवहन संचालकों, टूरिस्ट गाइडों, हस्तशिल्पियों, कारीगरों, बुनकरों इत्यादि को रोजगार उपलब्ध होता है। पर्यटन से न केवल राज्य में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी, अपितु राज्य का पिछड़ापन भी दूर होगा। स्थानीय निवासियों को मनोरंजन के साधन उपलब्ध होंगे साथ ही प्रदेश का पर्यटन के माध्यम से औद्योगिक विकास होगा। अतः आवश्यकता है एक सुनियोजित विकास की।

परिचय–

पर्यटन शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण ट्यूरिज्म (Tourism) है जो कि ट्यूर (Tour) से सम्बन्धित है। ट्यूर शब्द लैटिन भाषा के 'टोरनस' (Tornaus) शब्द से बना है यह शब्द वृत्त की ओर संकेत करता है, इसी 'टोरनस' शब्द से यात्रा चक्र या पैकेज टूर का विचार उत्पन्न हुआ है। कुछ विद्वान् अंग्रेजी शब्द Tourism की उत्पत्ति टोराह (Torah) शब्द से मानते हैं। जो एक हिब्रू शब्द है। टोराह का तात्पर्य अध्ययन करना, सीखना एवं शोध करना होता है।

मानव के अस्थायी रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए गमन करने को ही पर्यटन कहते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्यता को देखने, स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्वतीय स्थलों पर जाने, धार्मिक स्थलों का दर्शन करने, ऐतिहासिक स्थलों की भाषा, संगीत, साहित्य, लोक जीवन तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने आदि की दृष्टि से जो यात्राएँ की जाती हैं उसे पर्यटन कहते हैं इन यात्रियों को पर्यटक कहा जाता है। भ्रमण करने, नये स्थानों को देखने की इच्छा मानव स्वभाव में हमेशा से रही है। भ्रमण करने न केवल मनुष्य की जिज्ञासा की ही पूर्ति होती है वरन् उसके चहूँमुखी ज्ञान में वृद्धि होती है। सामान्यतः लोग अपनी व्यस्तता से हुई थकान को दूर करने के लिए प्राकृतिक वातावरण के पर्यटन स्थलों को अधिक महत्व दे रहे है।

पर्यटन द्वारा विश्व के विभिन्न देशों की संस्कृति व सभ्यता का आदान–प्रदान एवं अध्ययन भी होता है। इससे आपस में मैत्री सद्भावना भी बढ़ती है। इसीलिए भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था, "हमें देशी विदेशी मित्रों का स्वागत करना चाहिए न केवल इसलिए कि पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। बल्कि इसलिए कि पर्यटन से आपसी सद्भावना व

सूझबूझ की भावना ज्यादा बढ़ती है। आज जितनी आवश्यकता इस सद्भावना की है। उतनी किसी चीज की नहीं है।"

आधुनिक समय में पर्यटन एक उद्योग बन गया है। इस उद्योग में कम पूँजी निवेश करके अधिक बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है। पर्यटन उद्योग कई सम्बन्धित उद्योगों एवं व्यापारों से मिला जुला व बिना चिमनी के धुआँ रहित उद्योग है। इसमें उस तरह का उत्पादन नहीं होता जैसे किसी कारखाने या कृषि फार्म में होता है। बल्कि पर्यटकों द्वारा व्यय की गई मुद्रा से वे समान व सेवाएँ उपलब्ध होती हैं जो उद्योग के उत्पादक हैं। कुछ देशों में तो पर्यटन प्रमुख उद्योग के रूप में चल रहा है। जैसे, इटली, स्पेन, थाइलैण्ड।

अध्ययन क्षेत्र–

राजस्थान हमारे देश का क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। यह देश के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है। राज्य का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किमी है। राजस्थान का विस्तार 23.3. से 30.12. उत्तरी अक्षांश एवं 69.30. से 78.17. पूर्वी देशान्तर के मध्य है। राज्य का अधिकांश भाग कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है।

राज्य में वार्षिक वर्षा का औसत में विविधता पायी जाती है। यहाँ उत्तर–पश्चिमी मरुस्थलीय भाग क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 20 से.मी. से 50 से.मी. है तो वहीं दक्षिण–पूर्वी पठारी भाग में औसत वार्षिक वर्षा 80 से.मी. से 120 से.मी. पायी जाती है। यहाँ शुष्क से अति आर्द्र प्रकार की जलवायु पायी जाती है। यहाँ औसत तापमान 38ह सेंटीग्रेड रहता है परन्तु ग्रीष्म ऋतु में उच्चतम तापमान 40ह.45ह तथा शीत ऋतु में तापमान .2ह सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है।

राज्य में अरावली पर्वतमाला का विस्तार 550 कि.मी. है। ये राज्य के दक्षिण–पश्चिम उदयपुर से लेकर उत्तर–पुर्व खेतड़ी सिंघाना तक फैली हुई हैं। राज्य की सर्वाधिक ऊँची पर्वत चोटी गुरुशिखर है। अरावली से अनेक नदियाँ निकलती हैं। जिसने इस क्षेत्र को समृद्ध किया है। राजस्थान के आर्थिक विकास, धार्मिक स्वरूप, भावनात्मक एकता के उन्नयन व विकास में नदियों ने विशेष भूमिका निभाई है। यहाँ की प्रमुख नदियों में चम्बल, बनास, माही, लूनी, कालीसिंध, पार्वती, खारी, सोम, जाखम आदि हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या 68ए548ए437 है। राज्य की दशकीय वृद्धि दर 21.31 प्रतिशत,

लिंगानुपात 928, जनसंख्या घनत्व 200, कुल साक्षरता 66.11 प्रतिशत, महिला साक्षरता 52.12 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता 79.19 प्रतिशत है।

उपरोक्त भौगोलिक पृष्ठभूमि होने के कारण व यहाँ की प्राकृतिक दृश्यावलियाँ, सुरम्य परिवेश, दुर तक लहराता रेत का समन्दर सभी कुछ इतना सम्मोहक है कि पर्यटक यहाँ बार–बार आना चाहते हैं।

परिकल्पनाएँ

1. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से आर्थिक एवं सामाजिक जीवन स्तर में सुधार होता है।
2. राजस्थान की कला, संस्कृति व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विदेशी व धार्मिक स्थल स्वदेशी पर्यटकों को अधिक आकर्षित करती है।

अध्ययन उद्देश्य–

1. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन उद्योग के महत्व को समझना।
2. आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका ज्ञात करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन आगम का अध्ययन करना।
4. पर्यटन से सम्बन्धित समस्या व उनके प्रभाव का आंकलन।
5. पर्यटन विकास से सम्बन्धित सम्भावनाएँ ज्ञात करना।

विधि तंत्र–

अध्ययन विशय का वैज्ञानिक, तुलनात्मक, क्रमबद्ध एवं तार्किक विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जायेगा, जिसमें प्राथमिक आंकड़ों का संकलन एवं द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया जायेगा। द्वितीयक आंकड़े व्यक्तिगत प्रलेखों या सार्वजनिक प्रलेखों द्वारा प्राप्त किये जाते हैं। जैसे–भारतीय पर्यटन विकास निगम (प्ज्क्ब्) दिल्ली, राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) जयपुर, ट्यूरिस्ट रिसेप्शन सेन्टर जयपुर, राजस्थान इन्स्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट जयपुर, राजस्थान राज्य होटल निगम लिमिटेड जयपुर, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय जयपुर, जनगणना विभाग जयपुर, कला एवं संस्कृति विभाग जयपुर, सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय जयपुर। अध्ययन क्षेत्र से संबंधित भौगोलिक आकृति व आंकड़ों को प्रदर्शित करने के लिए मानचित्र, रैखीय अलेख आदि प्रदर्शन विधियों का प्रयोग किया गया है।

राजस्थान पर्यटन उद्योग–

प्रकृति ने पर्यटन विकास की दृष्टि से राजस्थान को विषमता के साथ–साथ विविधता भी प्रदान की है और बर्फ से ढ़के पहाड़ों तथा समुद्र तटों के अलावा वह सब कुछ दिया है, जो देश के अन्य पर्यटन राज्यों में सहजता से उपलब्ध नहीं है। यहाँ की वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक सम्पन्नता, विशाल प्राकृतिक धरोहर, ऐतिहासिक तथ्यों व बलिदानों से अभिभूत राजस्थान की वीर भूमि अनेक अदभुत और आकर्शक पर्यटक स्थलों को समेटे हुए है।

ऐतिहासिक पर्यटन के अन्तर्गत बहुत से किले, महल, हवेलियाँ, खण्डहर, दुर्ग, अपने गौरवमयी अतीत की कहानी कहते पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। कभी शासक की शक्ति के पर्याय माने जाने वाले किलों का महत्व सुरक्षा के लिहाज से भले ही आज के विकसित वैज्ञानिक युग में गौण हो गयी है, परन्तु इतिहास की शानदार सौगात के रूप में आज भी ये अपने आप में कम महत्व नहीं रखते। यह प्रदेश न केवन शौर्य, साहस और सौन्दर्य के अद्भुत परिदृश्य के कारण बल्कि दुर्लभ व अनुपम भिति–चित्रों, उच्च शिल्प कला से विनिर्मित मंदिरों, हवेलियों व मकबरों के सौंन्दर्य, वास्तुशिल्पें के कारण भी देशी–विदेशी पर्यटकों के लिए स्वाभाविक आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है।

राजस्थान कला एवं संस्कृति का घर है। यहाँ के त्यौहारों, पर्वों तथा मेलों की अनूठी सांस्कृतिक परम्परा है। अगर नजदीक से राजस्थान को देखना हो, महसूस करना हो तो मेलों, पर्वों में भाग लेना किसी सुखद अनुभव से कम नहीं होगा। इनके प्रति जनसमाज की गहरी भावात्मक आस्था पायी जाती है। बरसों बीत जाने के बाद भी लोक आस्था के ये स्थल अपनी पहचान

बनाये हुये है तथा समाज को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में पिरोये हुए है।

मेहमान नवाजी की शानदार परम्पराओं के कारण राजस्थान में पर्यटन आरम्भ से ही यहाँ की परम्परा का हिस्सा रहा है। प्रतिवर्ष भारत भ्रमणार्थ आने वाले पर्यटकों में से लगभग एक तिहाई पर्यटक राजस्थान आते हैं। राजस्थान पर्यटकों का पसन्दीदा राज्य बन चुका है। अब विदेशी पर्यटक सबसे पहले राजस्थान रूख करते हैं। देश में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान अवश्य आता है। राजस्थान अब न केवल हेरिटेज–ट्यूरिज्म के लिए बल्कि मेडिकल एडवेन्चर, इको वैंडिंग, विलेज, ज्योग्राफिक रिलीजन और ट्रेन ट्यूरिज्म के लिए भी देशी विदेशी पर्यटकों की पहली पसन्द बनता जा रहा है।

राजस्थान में स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों का आगमन एवं तुलनात्मक विश्लेषण
(2006 से 2015 तक)

क्र. सं.	वर्ष	कुल पर्यटकों की संख्या	स्वदेशी	वृद्धि दर प्रतिशत	विदेशी	वृद्धि दर प्रतिशत	कुल पर्यटकों की वृद्धि प्रतिशत
1	2006	24703451	23483287	–	1220164	–	–
2	2007	27321571	25920529	10.38	1401042	14.82	10.60
3	2008	29836564	28358918	9.41	1477646	5.47	9.21
4	2009	26632105	25558691	–9.87	1073414	–27.36	–10.74
5	2010	26822400	25543877	–0.06	1278523	19.11	0.71
6	2011	28489297	27137323	6.24	1351974	5.74	6.21
7	2012	30063201	28611831	5.43	1451370	7.35	5.52
8	2013	31735312	30298150	5.89	1437162	–0.98	5.56
9	2014	34602065	33076491	9.17	1525574	6.15	9.03
10	2015	36662884	35187573	6.38	1475311	–3.29	5.96

स्त्रोतः पर्यटन विभाग राजस्थान, जयपुर। प्रगति प्रतिवेदन 2015–2016

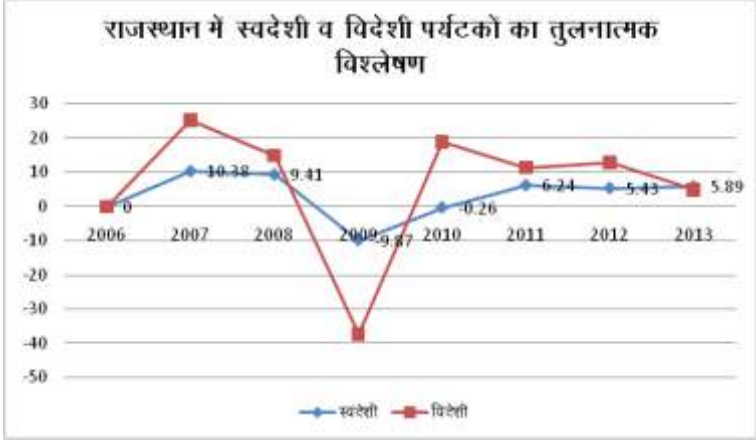

स्त्रोतः पर्यटन विभाग राजस्थान, जयपुर। प्रगति प्रतिवेदन 2015–2016

उपरोक्त वर्श 2006 से 2015 तक के अध्ययन से यह ज्ञात होता है। वर्श 2009 में 2008 की अपेक्षा स्वदेशी पर्यटकों में 9.87 प्रतिशत की कमी हुई है। जबकि इसी वर्श विदेशी पर्यटकों में 27.36 प्रतिशत की कमी हुई जो इन वर्षों में सबसे बड़ी कमी रही इस कमी का कारण राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व आतंकवादी गतिविधियॉ तथा पर्यटकों के साथ गलत व्यवहार रहा है।

वर्ष 2015 में राजस्थान में 3.66 करोड़ पर्यटक भ्रमण पर आये जिसमें 3.51 करोड़ स्वदेशी व 14.75 लाख विदेशी पर्यटकें थे। वर्श 2015 में 5.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। इस वृद्धि का श्रेय पर्यटन विभाग राजस्थान व राजस्थान सरकार द्वारा किए गए प्रयास, लपका गिरोह पर नियन्त्रण, पर्यटन योजनाऐं, पर्यटकों को दी जाने वाली सुविधाओं में वृद्धि और परिवहन सुविधा आदि रही है। राजस्थान में स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों के आगमन में उतार–चढ़ाव रहा है, फिर भी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

क्षेत्र के विविध पर्यटन स्थलों की सूचना या फिर अन्य सम्बन्धित जानकारी के लिए ब्रोशर, कैटलोग से संस्कृति का प्रसार तथा प्रचार किया जाए तथा इसका बजट और अधिक बढ़ाया जाए। देश में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ पर्यटन को प्रभावी प्रबंध के तहत् जोड़कर भी पर्यटन उद्योग का विकास किया जा सकता है।

पर्यटन के आर्थिक लाभ–

पर्यटन को आर्थिक विकास और रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। इसका देश के राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद ;ळक्व्द्ध में 6.88 प्रतिशत (वर्ष 2012–13) और भारत के कुल रोजगार सृजन में 12.36 प्रतिशत (वर्ष 2012–13) का योगदान है जिसमें निरन्तर वृद्धि दर्ज की जा रही है। वर्ष 2016 में भारत में विदेशी मुद्रा आय (एफईई) 1,55,650 करोड़ रही जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 15.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। जबकी वर्ष 2015 में पिछले वर्ष की तुलना में एफईई 9.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जो कि पर्यटन क्षेत्र में तीव्रता का द्योतक है।

आधुनिक समय में पर्यटन उद्योग का रूप ले चुका है। इस उद्योग में पूँजी निवेश कम करना होता है व विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है। पर्यटन उद्योग कई सम्बन्धित उद्योगों एवं व्यापारों से मिला जुला उद्योग है। इसमें पर्यटकों द्वारा व्यय की गई मुद्रा से वे समान व सेवाएँ उपलब्ध होती हैं जो उद्योग के उत्पादक हैं। पर्यटन के अन्तर्गत वे सारी आर्थिक क्रियाएं भाामिल की जा सकती हैं जो अल्पकालीन प्रवास, आवास सुविधा, खान–पान की मांग को प्रभावित करती है। पर्यटन किसी विशिष्ट क्षेत्र में उद्योग नहीं हो सकता है परन्तु आर्थिक नजरिए से मांग की उत्पत्ति पर्यटन से की जा सकती है। अतः पर्यटन से संबंधित सभी क्रियाएं पर्यटन उद्योग के अन्तर्गत आती हैं। दूसरे भाब्दों में पर्यटन उद्योग का तात्पर्य है उन सभी माध्यमों से जो पयटकों को सुविधाएं एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाते हैं। विभिन्न प्रकार के यात्रियों जैसे व्यापारी, सैलानी, वाणिज्य यात्री, विद्यार्थी, सम्बन्धी एवं मित्रगण आदि की आव यकताओं की पूर्ति पर्यटन उद्योग द्वारा की जाती है। अतः पर्यटन उद्योग खुद में विस्तृत आर्थिक संगठन है।

प्राथमिक व्यापारों में होटल व खान–पान उद्योग व यात्रा अभिकरण इकाइयां आति हैं। सहायक व्यापार के अंतर्गत वे व्यापार भाामिल किए जा सकते हैं, जो कि यात्रियों को सेवा प्रदान करते हैं, उदाहरण के लिए दुकानें, स्मारिकाएं, पुरातत्वकालीन सामान, उपहार विक्रेता, मनोरंजन (नाट्यशाला, सिनेमाघर, विशष पर्व व त्योंहार संगठित क्रीयाएं), बैंक, होटलों को सामान एवं सेवाएं उपलब्ध कराने वाले व्यापारी, खान–पान इकाइयाँ , परिवहन से जुड़े उद्योग, सार्वजनिक सेवाएं, बिमा कंपनियां आदि। अतः बहुत से उद्योग पर्यटकों के लिए वस्तुओं की उपलब्धता सुनि चत करते हैं।

पर्यटन रोजगार सृजन का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। इसका महत्व आर्थिक विकास और विशेष तौर पर देश के दूर–दराज के हिस्सों में रोजगार सृजन का एक माध्यम होने से है। पर्यटन की आज की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पर्यटकों को दी जाने वाली सेवाओं और वस्तुओं की बिक्री से पर्यटन से जुड़े लोगों के आय स्तर में वृद्धि होती है। पर्यटन से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को रोजगार मिलता है। पर्यटन से यहाँ के होटल्स, ट्रैवल एजेन्सियां, टैक्सी, हैण्डीक्राफ्ट, यातायात, हवाई जहाजों, पर्यटक गाइडों आदि को रोजगार मिलता है।

पर्यटन विकसित और विकासशील सभी देशों की अर्थव्यवस्था को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। अर्थव्यवस्था की परिपक्वता में पर्यटन आज महत्वपूर्ण प्रेरक ही नहीं बल्कि राष्ट्रों के सभी स्तरों पर विकास की भूमिका निभा रहा है। विदेशी एवं घरेलू दोनों

ही पर्यटन आय का सृजन करते हैं। पर्यटकों द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से किया गया खर्च किसी भी स्थान विशेष की अर्थव्यवस्था में लाभ पहुंचाता है।

वर्तमान में पर्यटन के आर्थिक लाभ इतने सबल है कि व्यावहारिक रूप से विश्व के सभी देशों ने पर्यटन के विकास की सराहना की है। समस्त विश्व में विभिन्न पर्यटन केन्द्रों पर अपने क्षेत्रों में सुनियोजित और व्यवस्थित रूप के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अत्यधिक प्रतिस्पर्धा चल रही है।

निष्कर्ष व सुझाव

1. राजस्थान की संस्कृति का स्वरूप अत्यन्त विराट है। यहाँ का गौरवमयी इतिहास, समृद्ध संस्कृति, प्राकृतिक दृश्यावलियाँ, सुरम्य परिवेश एवं मेले, त्योहार, हस्तकलाऐं, आदि पर्यटकों को आकर्षित करते है।
2. ऐतिहासिक पर्यटक स्थल संरक्षण के अभाव निरन्तर क्षतिग्रस्त होते जा रहे हैं। ऐसे में यह जरूरी है कि इनके संरक्षण व जीर्णोद्वार किया जाये।
3. राजस्थान में पर्यटन के विकास की काफी संभावनाएँ हैं यहाँ अब पर्यटन के जो नये–नये रूप सामने आ रहे है जैसे– ग्रामीण, पर्यटन परम्परागत खेल, साहसिक पर्यटन आदि।
4. राज्य में पर्यटन विकास के लिए क्षेत्र में विभिन्न पैकेज ट्यूर व सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पर्यटकों को आकृशित किया जा सकता है।
5. राजस्थान में धारभूत सुविधाऐं आशानुरूप विकास नहीं हुआ है, इसलिये केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा इस संबंध में ठोस उपाय करने चाहिऐं।
6. पर्यटन उद्योग बहुत संवेदनशील माना गया है। इस उद्योग की प्रगति के लिए आन्तरिक शांति, सद्भाव व सौहार्द्र की नितान्त आवश्यकता मानी गई है।
7. समाज में तेजी से बढ़ रहे अपराध से पर्यटन स्थलों पर असुरक्षा का माहौल बनता है। अतः यहाँ सुरक्षा पर्यटक सहायता बल को बढ़ावा दिया जाये व कानून सक्तायी से लागू किया जाये।
8. पर्यटन विकास के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों के साथ आम जन की भागीदारी आवश्यक है।
9. वर्तमान में बढ़ते पर्यटन दबाव के कारण 'इको टूरिज्म' अर्थात् पारिस्थितिकी पर्यटन को प्रदेश में बढ़ावा दिया जाए।
10. पर्यटन को वर्तमान उद्योग दर्जा मिल गया है। अतः पर्यटन आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। पर्यटन स्थानीय क्षेत्र विकास के साथ रोजगार उपलब्ध कराने में विशेष महत्त्वपूर्ण है। अतः पर्यटन विकास से इस प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के साथ ही वहां मौजूद प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का समुचित सदुपयोग सम्भव हो सकता है।

शोधार्थी

भुगोल विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कपूर, बिमल कुमार (2008), "पर्यटन प्रबन्ध एवं मानव संसाधन विकास", रजत प्रकाशन, नई दिल्ली।
- जैन, हुकुमचन्द एवं माली, नारायण लाल (2015), "राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- जोशी, राधेश्याम(2000) "राजस्थान दर्शन", प्राईम पब्लिकेशन्स, भीलवाड़ा।
- रजक, जगन्नाथ (2011), "भारत में पर्यटन उद्योग की नवीन प्रवृतियाँ एवं आर्थिक विकास", अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
- व्यास, कुलदीप (2005), "भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन नीति तथा दिशा निर्देश", प्रकाशित लेख।

- व्यास, आर. के. (2008) : ग्रामीण पर्यटन एवं टिकाऊ विकास, अरिहंत पब्लिकेशन, जयपुर
- व्यास, राजेश कुमार (2011), "सांस्कृतिक पर्यटन", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- शर्मा, अतुल (2012), "पर्यटन भूगोल", इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
- शर्मा, अतुल (2012), "आर्थिक विकास में पर्यटन का योगदान", इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
- सक्सेना, हरिमोहन (2014),"राजस्थान का भूगोल" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- प्रगति प्रतिवेदन (2015–2016) पर्यटन विभाग, राजस्थान।
- वार्षिक प्रतिवेदन (2016–2017) पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।